बातचीत

'बातचीत' की जब शुरूआत हुई तब सोच यह था कि इसमें लड़कियों को एक मंच मिलेगा। दूसरे के.जी.बी.वी. के अनुभव शेयर होंगे। अब लग रहा है कि ज्यों-ज्यों बातचीत का सफर आगे बढ़ा है, लड़कियों व शिक्षिकाओं की भागीदारी निरन्तर बढ़ी है। बातचीत का यह एक तीसरा अंक है। लड़कियों को इस अंक का बेसब्री से इंतजार है। होना भी जरूरी है। यही तो एक पत्रिका है जिसमें वे अपनी बात अपने तरीके से कह पा रही हैं। इस अंक में लड़कियों की प्रतिक्रियाओं व अनुभवों को प्रमुखता देने का प्रयास किया गया है।

संपादक

यह सुरक्षित जगह है

मेरा नाम कृष्णा चौधरी है |मैं नया गांव की रहने वाली हूँ |मेरे गांव में पांचवी तक ही स्कूल है| पांचवी के बाद मैंने पढाई छोड़ दी उसी साल के.जी.बी.वी. खुलने के कारण मैं यहाँ रहने लगी | पिछले साल मेरे घरवाले मेरी शादी कर रहे थे जब इसका पता स्टाफ को चला तो सब ने मिल कर मेरी शादी रुकवाई | घरवाले पीपलू बाज़ार से ही शादी की खरीदारी करने आते और दो तीन घंटे के लिए मुझे साथ ले जाते | कभी गहने खरीदे जाते .... कभी कपड़े |धीरे-धीरे प्रधानाध्यापिका और वार्डन मैडम को इस बात का पता चला |मैंने मैडम से कहा कि कैसे भी हो पापा को मना लो ताकि वे मेरी शादी नहीं करें |जैसे ही शादी का दिन पास आया घरवाले छुट्टी दिलवाने के लिए आए मैडम ने साफ़ मना कर दिया , 'कुछ भी हो जाये छुट्टी नहीं मिलेगी |' घरवालों से मैडम ने कहा कि अगर आप जबरदस्ती करोगे तो पुलिस को फोन किया जा सकता है |आखिर घरवाले मान गए मेरी अध्यापिकाओं के सहयोग से मैं अन्याय से बच गई और आगे पढाई कर रही हूँ |मुझे लगता है कि के.जी.बी.वी. से सुरक्षित जगह कोई नहीं है |

- कृष्णा चौधरी , के.जी.बी.वी पीपलू (टोंक)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कविताएँ

बारिश

आसमान में काले बादल छा गए
थोड़ी देर में
मेंढक टर्राने लगे अपनी -अपनी टेर में
पानी ही पानी हो गया घर के आस -पास में
मोहन भाई निकल पड़े सोहन की तलाश में
मोहन_ सोहन दोनों भाई लगे खेलने पानी में
राजू भैया घर ना पाकर
पड़ गए बड़ी हैरानी में
तब ही राजू भैया ने कमरे की खोली खिडकी
लेकिन बाहर बड़े जोर से चम-चम बिजली
चमकी
खिडकी से देखा दोनों भाई खेल रहे पिछवाड़े में
मानो दो पहलवान कुश्ती लड़ रहे अखाड़े में
राजू भैया छाता लेकर निकले दोनों को लाने
लेकिन वहाँ जाकर खुद भी लगे नाचने और
गाने

सोनू

कक्षा 6 ,धोल की पाटी

मेरा सपना

(के.जी.बी.वी की लड़कियों के लिए)

जियो तुम फूलों की तरह
खुद महको और दूसरों को महकाओ |
जियो तुम नदियों की तरह
स्वयं शीतल बन कर दुनिया कि प्यास
बुझाओ |
तुम जियो तारों की तरह
स्वयं रोशनी बनकर
दुनिया को राह दिखाओ |
जियो तुम रंगों की तरह
अपने नूर से
दुनिया को को सजाओ |
जियो तुम अभिमान की तरह
स्वयं ऊंचा उठकर
सबका मान बढ़ाओ |

शिक्षिका— संजू गुर्जर

के.जी.बी.वी. सिरोही , टोंक

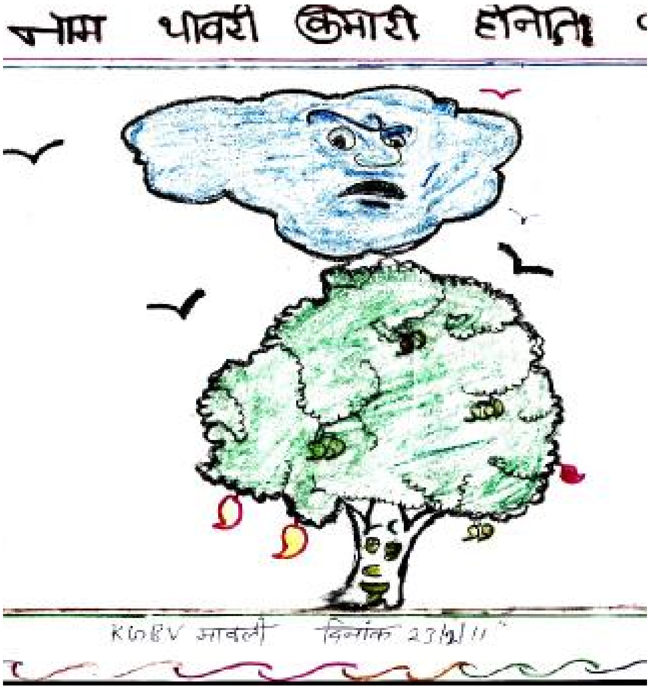

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारा मेला

हमने हमारे स्कूल में मेला लगाया था| मेला बहुत अच्छा था| हमें मेले में बहुत मजा आया| मेले में दूसरे केजीबीवी की बहुत सारी लड़कियाँ भी आयी थी| उनमें से बहुत सारी हमारी सहेलियाँ थी और बहुत सारी सहेलियाँ भी बनाई| मेले के लिए हमने बहुत सारी तैयारी की| आँगन को लीपकर बहुत सुन्दर मांडने बनाये| रंगोली बनाई| कागज की लुगदी के खिलौने बनाकर रंग भरा| सब जगह सफाई की| स्टॉल मैदान को खूब सजाया| बहुत सारे गुब्बारे और झंडियां भी लगायी| हमारा केजीबीवी उस दिन बहुत सुन्दर लग रहा था| हमने मिलकर मेले में बहुत आनंद लिया |

मेले में हमने गणित,हिन्दी,विज्ञान,अंग्रेजी और बहुत सारे मजेदार खेलों की स्टॉल लगायी| सब स्टालों को हम सब लड़कियों ने ही चलाया| मेरी स्टॉल चूड़ी में सिक्का डालने वाली थी| मेरी स्टॉल पर तो बहुत भीड़ रही| लड़कियाँ नम्बर लगाकर खड़ी थी सच में बहुत अच्छा लग रहा था| स्टॉल पर शब्द खोजना,विलोम शब्द,राज्य,देशों के बारे में बहुत जानकारी ली| लक्की ड्रा में तो सवालों के जवाब देकर बहुत सारे इनाम भी जीते| मेले में पतासी, मूँगफली, गजक,अमरुद भी बीक रहे थे| हमें केले भी दिए गये थे| जब मेला खत्म हुआ तब सब केजीबीवी की लड़कियों के साथ खाना भी खाया| ऐसा मेला तो हर साल होना चाहिए|

बिशना गुर्जर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पसंद — नापसंद

मेरा पसन्ददीदा टीवी सीरियल

मुझे झाँसी की रानी सीरियल पसंद है | सीरियल की कहानी अच्छी है |झाँसी की रानी के संस्कार अच्छे हैं |झाँसी की रानी का क्रांति गुरु बनना अच्छा लगता है |वह साहसी और वीर है | झांसी की रानी से अंग्रेजों के पसीने छूटते थे |झाँसी की रानी के एक लड़का होता है , उसे अंग्रेज हमला करके मार देते हैं |रानी के बचपन का नाम मनु था और उसके पति का नाम गंगाधर था |रानी ने एक लड़का गोद लिया था उसका नाम माधव राव था |रानी लड़के को पीठ पर बांध कर लड़ती थी | रानी कि बहादुरी देख कर हमें भी जोश आ जाता है|

निरमा चौधरी , कक्षा VIII

के.जी.बी.वी. मालपुरा (टोंक)

स्थितियां कुछ मुश्किल भी हैं

हमारा स्कूल बहुत अच्छा है लेकिन इसमें कुछ कमियां भी हैं | जैसे हमारे यहाँ तीन लेटरिन हैं उसमें से एक टीचर्स के लिए है | लड़कियों के लिए दो हैं | सुबह-सुबह लाइन लगी रहती है | किसी को ज़ोर से आती है तो वह पहले जाने कि कहती है , नहीं जाने देने पर झगड़ा हो जाता है | कभी-कभी लैट्रिन जाम हो जाती है तो हमें बाहर जाना पड़ता है | हम तो इस साल चले जायेगें| हम महसूस करते हैं कम चीजों के कारण कितना कष्ट उठाना पड़ता है हमारे यहाँ खिड़कियों पर कांच लगाने की आवश्यकता है | सर्दियों में ठंडी हवा आती है और डर भी लगता है | लड़कियां सुबह पांच बजे जाग जाती हैं | व्यायाम सत्र के बाद आठ बजे चाय मिलती है | चाय सुबह उठते ही मिल जाय तो सब को अच्छा लगता है |

सुमन कंवर राठौड

कक्षा VIII केजीबीवी मावली

सौलर लैम्प पाकर खुश हैं लड़कियाँ

केजीबीवी की प्रत्येक लड़की को यूनिसेफ की ओर से सोलर लैम्प वितरित किये गये हैं| ये लैम्प लड़कियों को बहुत पसंद हैं| इंटाली खेडा की कांता कहती है सर ! हमारे यहाँ हमेशा शाम के समय लाइट नहीं आती थी अब लैम्प मिलने के बाद कोई परवाह नहीं है| छत पर लेटे-लेटे आराम से पढ़ाई होती है|सेमारी में लैम्प पिछले माह मिले है यहाँ की लड़कियों ने अपने लैम्प पर मोटे अक्षरों में नाम लिख रखा है|अनीता बताती है नाम लिखने से लैम्प खोने का डर नहीं रहता| सब लैम्प जलते है तब डोरमेट्री में लाईट से भी ज्यादा उजाला हो जाता है|

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

घूम के आए हम

जबसे हमें पता चला कि हम घूमने जाएँगे तब से ही हम बहुत खुश थे |जिस दिन हमें जाना था उससे एक रात पहले हमने प्लानिंग की |उठना ,तैयार होना ,भोजन में मदद इन सब कामों को करने के लिए चार बजे उठने का प्लान बना |घूमने जाने के जोश में रात को नींद नहीं आ रही थी |लड़कियां सुबह चार बजे से पहले ही उठ कर ब्रुश करने लगीं ,नहाने लगीं |सबने नहाकर बाल बनाये और पूड़ियां बनाने रसोई में गए |आधी लडकियां सफाई में लग गईं |जब नाश्ता कर रहे थे तभी बस आ गयी |सभी लड़कियां उठ कर बस देखने लगीं | फटाफट नाश्ता किया, जूते पहने ,मौजे भी पहने और दो चोटियाँ भी बना ली |सब एक दूसरे की चोटियाँ बनाने लगीं |मैंने तो प्रियंका की चोटी बनाई थी |पानी की केतली और खाना बस में रखा |हमारी मैडम साथ थी | सबसे पहले हल्दीघाटी गए |महाराणा प्रताप की तस्वीर देखी |वहाँ सच में खून जैसी जगह थी| युद्ध के समय यह जमीन लाल हो गयी थी|) हमें एक आदमी ने बताया कि महाराणा प्रताप के घोड़े ने यहाँ से कूद कर खाई को पार किया था| उस आदमी ने हमें कुर्सियों पर बैठाया और टीवी चलाकर महाराणा प्रताप कि तस्वीरें दिखाईं |हमें सैनिकों के साथ युद्ध भी दिखाया| खून की धाराएं बह रही थीं |हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गयी थी |आगे चले तो एक गाय और शेर दिखाई दिए |यहाँ महाराणा प्रताप ने शेर से युद्ध किया था | उससे थोडा और आगे महाराणा प्रताप का घोडा घायल पड़ा था | हाथी ने अपनी सूंड में तलवार लेकर घोड़े कि टांगपर ज़ोर से मारी , घोडा कमज़ोर हो गया | महाराणा प्रताप उसके पास बैठ कर रोने लगे | वहीँ पर एक तालाब था उसमे लोग घूम रहे थे | कृष्णजी कालिया नाग पर खड़े थे | ये तो हुई हल्दीघाटी की बात | इसके बाद कुम्भलगढ़ गए वहाँ खाना खाया | पैदल-पैदल ही चलने लगे | वहाँ बहुत सीताफल थे | हमने तोड़कर खाए | इतने फल थे कि पूछो मत | मुझे तो देख कर बहुत खुशी हो रही थी | हम तो पेड़ों पर बैठ भी गए | चलते-चलते थक गए और प्यास लगने लगी | कुम्भलगढ़ से चली बस चारभुजा जाकर रुकी | रात को एक के.जी.बी.वी में रुके | वहाँ बहुत अच्छा लगा | हमने लड़कियों से खूब बात की | वहाँ की लड़कियों ने हमारी खूब हेल्प की | सुबह जोधपुर का किला देखने गए | जोधपुर के किले का नाम मेहरानगढ़ है | यहाँ भी हमने बहुत सारे फोटो खिंचवाये | वहाँ से बस में सामान रख कर के.जी.बी.वी के लिए रवाना हो गए | बस में हमने बहुत गाने गाए | हंसी मज़ाक करते-करते कब केजीबीवी पहुँच गए पता ही नहीं चला | घूमने में हम सबको अच्छा लगा | हमें साल में दो बार तो घुमाने ले ही जाना चाहिए |

हिना कुमारी मीणा

कक्षा VIII

धोल की पाटी

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गवरी लोक नृत्य

हमारे यहाँ मेवाड़ में भील जाति के कलाकारों द्वारा गवरी लोक नृत्य किया जाता है| भादवे और आसोज में 40 दिनों तक यह नृत्य चलता है| गाँव का भोपा गवरी करने वाले पात्रों को माताजी के मंदिर में ले जाता है| नए कपड़े पहनाकर गवरी की शुरूआत करवाता है| गवरी करने वाले 15-20 पुरुष होते हैं | भोपा गवरी की शुरुआत अपने ही गाँव से करवाता है| दो दिन तो अपने ही गाँव में ही करते हैं | उसके बाद दूसरे गांव के लोग उनको गवरी खेलने के लिए बुलाते हैं | जब तक गवरी चलती है, कलाकार उसी गांव के मेहमान होते है| खाने-पीने और पैसे देने की जिम्मेदारी जिसने बुलाया है, उसकी होती है| इन कलाकारों में दो राईया होते हैं जो 40 दिन तक अन्न नहीं खाते हैं | गवरी के दौरान बैठे रहते हैं | बीच-बीच में उनमें भाव आते हैं | दूसरे कलाकार भी एक समय खाना खाते हैं | नंगे पैर रहते हैं | जमीन पर सोते हैं | 40 दिन तक घर नहीं जाते हैं | देवी का पात्र करने वाले औरतों के कपड़े और गहने पहने रहते हैं | ढोल,थाली,मादल बजाकर भस्मासुर कथा,शिव-पार्वती कथा का नृत्य करते हैं| ये चार तरह के पात्र करते हैं- देव,मानव,दानव और पशु | सुबह 9-10 बजे गवरी शुरू होती है जो शाम 5 बजे तक चलती हैं| गवरी के अंत में उसी गाँव में वापस आते हैं जहां से शुरुआत की थी वहीं गौरी की प्रतिमा का विसर्जन कर गवरी समाप्त करते हैं |सबको गवरी देखना बहुत अच्छा लगता हैं| देखते-देखते सुबह से शाम हो जाती है लेकिन गवरी देखने में बहुत मजा आता है| धूप लगती रहती है,प्यास लगती रहती है, लोग खड़े-खड़े थक जाते हैं लेकिन पूरी गवरी देखकर ही हटते हैं|

कौशल्या मीणा

कक्षा- VI , धोल की पाटी

हौसला

हमारे स्कूल में 3.2.2011 को प्रतियोगिताएं हुईं | जिनमें प्रमुख प्रतियोगिताएं सामान्य ज्ञान , शीघ्र गणना , अन्त्याक्षरी , श्रुतलेख आदि थीं | इनमें से मैंने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लिया | इसमें 34 लड़कियों ने भाग लिया | इस प्रतियोगिता के बारे में मुझे एक दिन पहले बताया गया था | मैंने प्रतियोगिता के सारे सवालों को हल किया | जिसमे एक सवाल था कि मनुष्य के शरीर में कितनी हड्डियां होती हैं ? मैंने 205 पर निशान लगा दिया | कुल 20 सवाल थे और 20 मिनट में हल कराये गए | मैंने पूरे सवाल किये मगर यह सवाल गलत निकला | फिर भी इस बलॉक स्तर की प्रतियोगिता में मैंने प्रथम स्थान प्राप्त किया | जिसमें मुझे इनाम एवं प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ | इसके बाद मैं जिला स्तर प्रतियोगिता में पहुंच गई | यह प्रतियोगिता भी 9.2.2011 को हुई और इसके बारे में भी मुझे एक दिन पहले ही बताया गया | इसमें भी मैंने बिना तैयारी के ही भाग लिया और द्वितीय स्थान प्राप्त किया | इसमें भी मुझे इनाम और प्रमाण-पत्र प्राप्त हुए | अब मैं संभाग स्तर पर पहुँच गयी हूँ | वहाँ पर भी कोशिश करुँगी कि उसमे सफलता पाऊँ | यह प्रतियोगिता अजमेर में होगी |

रिंकू चौधरी

कक्षा VIII केजीबीवी टोंक

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बात करना क्यों जरुरी है ?

इशारों से भी बात होती है लेकिन पूरी समझ में नहीं आती| घर में तो फिर भी समझ लें, लेकिन बाहर जाते हैं और कोई इशारों में कुछ कहें तो समझ में नही आता| मुझे गणित का सवाल नहीं आता और सहेली को आता है तो मुँह से तो बोलना ही पड़ेगा तब ही तो वो सवाल समझाएंगी | कक्षा में पेन पेंसिल चाहिए तो सहेली से बात करके ही मांगना होगा| सहेलियाँ बनाने के लिए बात करना जरुरी है| मन में बहुत सारी बातें होती हैं,बात नही करेंगे तो मन की बात मन में ही रह जायेगी| बहुत-सी मन की बातें किसी को भी नहीं कहनी चहिये, बताने से कई बार काम बिगड़ जाता है और मन में बैचेनी होती है| अपनी गलती मन में खटकती है| हंसी-खुशी की बातों में मन नहीं लगता और बातों में मन लगाने के लिए बात करना जरुरी है|

(बात करना क्यों जरुरी है विषय पर कुछ इस तरह से संपत ने अपनी लिखित प्रतिक्रिया दी)

संपत मीणा , कक्षा-VII , केजीबीवी-आंवा

मोबाइल बना सीखने का माध्यम

हमारे यहाँ कक्षा 6,7,8 में 6 लड़कियां ऐसी थीं जिनको कई प्रयासों के बावजूद 100 तक की संख्याओं की पक्की पहचान नहीं हो पायी थी | क्लास रूम में बैठे-बैठे विचार आया कि इन सब लड़कियों के माँ-बाप के पास मोबाइल हैं | ये अपने परिचितों के मोबाइल नम्बर याद भी रखती हैं | यह कैसे कर पाती हैं ? अंक सिखाने का एक तरीका दिखाई देने लगा | लड़कियों से बारी-बारी से अपने मोबाइल नम्बर बोलते हुए लिखने को कहा | लडकियां फुर्ती से 2 व 3 अंकों को एक साथ बोल रहीं थीं | मैंने आपस में एक दूसरे के नम्बर बोलने को कहा | एक दो लड़कियों ने थोड़ी कठिनाई महसूस की | सबने अपने-अपने अंदाज़ में नम्बर बोला | लड़कियों को पांच-पांच मोबाइल नम्बर बताने को कहा गया | लड़कियों ने खुशी से कहा , " मैडम वोडाफोन के या एअरटेल के ? " मैं चौंकी लड़कियों को सीरीज का भी पता था कि कौनसा नम्बर किस कम्पनी का है | नम्बर बताते समय लड़कियां यह भी ध्यान रख रहीं थीं कि कहीं कोई नम्बर आपस में मिल न जाये | लड़कियां मोबाईल नम्बर के माध्यम से अंकों को बोल पाने में सहज थीं |लगातार दो—तीन दिन का अभ्यास अंकों की पक्की पहचान का तरीका साबित हुआ |

शिक्षिका —सुमित्रा मेघवाल , केजीबीवी सेमारी , उदयपुर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारी यात्रा

हम सब लड़कियाँ सुबह चार बजे उठीं| हाथ,मुहँ,पैर धोए| कपड़े पहने और बाल बनाये फिर काजल और लिपस्टिक व पाउडर लगाया| अँगुलियों पर हमने नेल पालिस लगाई| तब तक दोनों मेडम भी तैयार हो गयी थी| वीणा बाई के साथ मिलकर खाने का सामान बस में रखा| जब बस में बैठ गये तो बस रवाना हुई| बस वाले ने टेप चालू किया तो लड़कियाँ डांस करने लगी| कोटड़ा से निकले तो तीन गाँव आये| गाँव के नाम पाथर पाड़ी,थला,डूंगरपुर थे| डूंगरपुर गाँव के पास एक नदी बह रही थी| नदी के बाद में कुकर माताजी का मंदिर देखा,माताजी के नाम के नारे भी बोले| उसके बाद एक छोटे से शहर में रुके| पोहे- बूंदी का नास्ता किया और चाय पी| उसके बाद सोम कमला अम्बा बांध देखा| पानी में नावें चल रही थी| वहाँ से बेणेश्वर मेला देखने गये| बेणेश्वर मेले में हमने बहुत सारी खरीददारी की| मैंने तो चूडियाँ,कानों के झुमके माला,छोटा-सा बैग ख़रीदा| मेले में घूमने के बाद धर्मशाला में गये वहाँ खाना बनाकर खाया| खाना खाकर वापस बस में बैठ गये| वहाँ से बांसवाडा गये तब तक रात हो चुकी थी| रुकने की जगह देख रहे थे| तब अचानक पुलिस वालों ने बस रुकवाई| पुलिस वालों से बात की फिर एक धर्मशाला में व्यवस्था हुयी| रात वहीं बितायी| सुबह माही बांध देखने गये| देखकर वापस धर्मशाला में आ गये| वहाँ बाफला बाटी और आलू की सब्जी बनाई| खाने में ये बहुत अच्छी लगी| खाने के बाद घूमने निकल गये| उसके बाद एक बाग में गये| वहाँ बहुत सारे गुलाब के फूल थे| झूले भी थे| बहुत देर तक हम सब झूला झूले| लड़कियों को इसमे खूब मजा आया| फोटो भी बहुत खिचवाएं| वहाँ से बस में बैठकर कोटड़ा के लिए रवाना हुए| उदयपुर, गोगुन्दा,देवला,जुड़ा,दाडमीया,लाबाहलदूर होकर वापिस केजीबीवी में रात बारह बजे पहुचें| आते ही हम तो सो गये तो सुबह ही उठे|

शारदा कुमारी ,कक्षा –VI ,केजीबीवी – कोटड़ा

बातचीत , अंक ३ , अप्रैल २०११ , प्रकाशक — संधान , सौजन्य से — यूनिसेफ
संपर्क : डी—9 देव नगर , सामुदायिक भवन के पास , कमल एंड कम्पनी के सामने , टोंक रोड ,जयपुर (राजस्थान)

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com